माहेश्वरी समाज की उत्पत्ति का इतिहास

स्थान : लोहारगल (सीकर के पास) राजस्थान विक्रम सम्वत् ८ तिथि जेठ शुल्क ६

खंडेला नगर में सूर्यवंशी राजाओं में चौहान जाति के राजा खड़गलसेण राज्य करते थे। एक समय राजा ने भू-देव जगतगुरू ब्राह्मणों को बड़े आदर पूर्वक अपने मन्दिर में भोजन कराकर उन्हें द्रव्य आदि दिये। तब ब्राह्मणों ने कहा – हे राजन् ! तेरा मन वांछित वरदान सिद्ध हो जाय, तब राजन् बोला – हे महाराज मुझे पुत्र की वांछना है-तब ब्राह्मणों ने कहा – हे राजन्, तू शिव-शक्ति की सेवा कर, तेरे चक्रवर्ती पुत्र बड़ा बलशाली और बुद्धिमान होगा लेकिन उसे सोलह साल तक उत्तर दिशा में मत जाने देना और न ही सुर्यकुण्ड में स्नान करने देना तथा न ही ब्राह्मणों से द्वेष करने देना। अन्यथा इसी देह से उसका पुर्नजन्म हो जायेगा। राजा ने वचन दिया कि हे ब्राह्मण देवताओं मैं ऐसा नही करने दूँगा। तब ब्राह्मणों ने आशीर्वाद दिया, और राजा ने ब्राह्मणों को दान दक्षिणा देकर विदा किया। ब्राह्मण अपने-अपने स्थानों पर चले गये।

राजा खड़गलसेंण के चौबीस रानियाँ थी, उनमें से रानी चम्पावती के पुत्र हुआ। राजपुत्र का नाम सुजान रखा गया। राजपुत्र वास्तव में महाबलशाली, बुद्धिमान था। उसने बारह वर्ष की आयु में ही चौदह विद्याओं के ज्ञान प्राप्त कर लिया। राजा बड़ा प्रसन्न हुआ। वह शस्त्र विद्या में भी निपुण हो गया। लोग राजपुत्र से डरने लगे। उसी समय जैन धर्म को मानने वाले आये और उन्होंने राजपुत्र को जैन धर्मोपदेश दिया जिससे राजपुत्र प्रभावित हुआ और सब-मत के विरूद्ध हो गया, ब्राह्मणों से द्वेष करने लगा।

राजपुत्र ने अपने सम्पूर्ण राज्य में शिवमूर्ति का खण्डन कर जैन मन्दिर स्थापित किए। केवल उत्तर दिशा ही शेष रह गई जिस ओर जाने से राजा ने मना कर रखा था। लेकिन राजपुत्र कब मानने वाला था, वह ७२ उमरावों सहित उत्तर दिशा की ओर रवाना हो गया, वहाँ जाकर राजपुत्र ने देखा कि सूर्यकुण्ड पर ६ ऋषिवर पाराशर, गौतम, भारद्वाज आदि यज्ञ करा रहें है। राजपुत्र ने क्रोधित होकर अपने साथ में आए उमरावों को आदेश दिया कि इन ब्राह्मणों को मारो और यज्ञ सामग्री नष्ट कर दो। यह सुन ब्राह्मणों ने सोचा कि यहाँ राक्षस आ गये और उन्होंने राजपुत्र का ख्याल न करके श्राप दे दिया कि हे अबुद्धियों, तुम जड़-पाषाणवत हो जाओ ७२ उमराव और राजपुत्र घोड़ों सहित पाषाणवत हो गए। जब राजा ने यह समाचार सुना तो राजा ने प्राण छोड़ दिए। जब राजा के संग सोलह रानियाँ सती हो गई और सम्पूर्ण राज्य को रजवाडों ने दबा लिया तब राजपुत्र की स्त्री और ७२ उमरावों की स्त्रियाँ रूदन करती हुई ब्राह्मणों के चरणों में आकर गिर पड़ी तब ब्राह्मणों ने उपदेश दिया और एक गुफा बतला दी कि तुम्हारे पति शिव-पार्वती के वरदान से पुनः शुद्धबुद्धि हो जायेगें। तब वे सब शिव-पार्वती का स्मरण करने लगी। ब्राह्मणों के कहे अनुसार वहाँ भगवान शिव-पार्वती आये, जब सब स्त्रियाँ पार्वती के पैर लगी तब पार्वती जी

ने सौभाग्यवती हो, चिरंजीव हो ऐसा आर्शीवाद दिया तब राज पत्नी के साथ ७२ उमरावों की स्त्रियाँ हाथ जोड़कर कहने लगी- देवी, वरदान सोच समझ कर दीजिये क्योंकि हमारे पति तो ब्राह्मणों के श्राप से पत्थर हो गए। जब पार्वती जी ने भगवान महादेव जी के चरणों में गिरकर प्रार्थना की तब महादेव जी ने राजपुत्र के साथ ७२ उमरावों को जागृत कर दिया। जब उन ७२ उमरावों ने शंकर जी को घेर लिया तब शंकर जी ने वरदान दिया कि तुम क्षमादान हो। लेकिन राजपुत्र सुजान पार्वती का रूप देखकर लुभायमान हो गया, तब पार्वती जी ने उसे श्राप दे दिया।

जब ७२ उमरावों ने शंकर जी की प्रार्थना की तब महादेव जी ने कहा कि तुम क्षत्रित्व एवं शस्त्र को छोड़कर वैश्य रूप धारण करो, लेकिन हाथों की जड़ता के कारण शस्त्र नहीं छूटे। तब महादेव जी ने कहा कि तुम सूर्यकुण्ड में स्नान करो तब सूर्यकुण्ड में स्नान करते ही शस्त्र छूट गये और तलवार लेखनी भालों से डाड़ी, ढालों से तराजू बनकर उन्हें वैश्य पद मिल गया, जब इन उमरावों को वैश्य बना दिया तब ब्राह्मणों ने शंकर जी के सामने आकर प्रार्थना की कि हमारा यज्ञ कब सम्पूर्ण होगा क्योंकि इन्होंने जो विध्वंस किया है। तब शंकर जी बोले-तुम इन्हें शिक्षा दो जिससे ये स्वधर्म से चलने लगेंगे। इस प्रकार शंकर जी अंतर्ध्यान हो गये और वे ७२ उमराव छः ऋषिश्वरों के चरणों में गिर पडें। एक-एक ऋषि ने उन्हें अपना शिष्य बना लिया। इस प्रकार से हर एक ऋषि के १२-१२ शिष्य हो गए। वे ही अब यजमान कहलाये जाते हैं।

(१) अजमेरा (२) अटल (३) असावा (४) आगीवाल (५) आगसूड (६) इनाणी (७) करवा (८) काकांणी (६) काहाल्या (१०) कालंत्री (११) कासट (१२) कौचल्या (१३) कालाणी (१४) काबरा (१५) खटवड़ (१६) गिलड़ा (१७) गटाणी (१८) गदइया (१६) गगराणी (२०) चेचाणी (२१) चौखडा (२२) चाण्डक (२३) छापरवाल (२४) जाखेटिया (२५) जाजू (२६) झंवर (२७) डाड (२८) डागा (२६) तौसणीवाल (३०) तौतला (३१) तापड़िया (३२) दरक (३३) धूत (३४) धूपड (३५) न्याती (३६) नावधर (३७) नवाल (३८) परताणी (३६) पलौड (४०) बाहेती (४१) बीदादा (४२) बिहाणी (४३) बजाज (४४) बिड़ला (४५) बंग (४६) बलदवा (४७) बालदी (४८) बूब (४६)) बांगड (५०) भंडारी (५१) भट्टड़ (५२) भूतड़ा (५३) भूराड़या (५४) भन्साली (५५) मालू (५६) मालपाणी (५७) माणूंधण्यां (५८) मूंधड़ा (५६) मंडोवरा (६०) मिधियार (६१) मौदाणी (६२) राठी (६३) लढ़्ढा (६४) लाहोटी (६५) लखोटिया (६६) सोनी (६७) सोमाणी (६८) सोढाणी (६६) सारडा (७०) सिकची (७१) हुरकट (७२) हेडा (७३) पोरवार (७४) देव देवपुरा (७५) मंत्री (७६) नौलखा